आदर्श प्रश्न- पत्र - 2

संकलित परीक्षा - I

विषय - हिंदी 'ब'

कक्षा - दसवी

निर्धारित समय: 3 घण्टे **अधिकतम अंक: 90**

निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड है -

   खंड क- **20 अंक**

   खंड ख- **15 अंक**

   खंड ग - **30 अंक**

   खंड घ - **25 अंक**

2. चारो खंडो के प्रश्नो के उत्तर देना अनिवार्य है।

खंड-क

(अपठित गद्यांश)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर, दिए गए प्रश्नो के उत्तर के विकल्प छाँटकर लिखिए -**

पिछले दो-तीन सालों में रामचरितमानस कि चौथी सदी के संबंध में देश और विदेश में बहुत से जलसे किए गए | इस दौरान तुलसीदास और रामचरितमानस के बारे में कई अहम किताबें भी लिखी गईं | कुछ लोगों ने तुलसीदास को पुराणपंथी और दकियानूसी बताया तो कुछ और लोगो ने उन्हें प्रगतिवादी और समाजवादी साबित किया | मैं इस बहस में नहीं पड़ना चाहता | इतिहास का विद्यार्थी होने के नाते मेरी रूचि मध्य युग के कवियों, संतो और लेखकों में रही है | मैंने उनको भक्ति-आंदोलन को सही दिशा सूफ़ी फ़कीरों और संत कवियों ने दी | तुलसीदास का इस आन्दोलन में बड़ा योगदान रहा है | मैं आज तुलसीदास के बारे में न तो ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करना चाहता हूँ और न ही बात पर जोर देना चाहता हूँ कि उन्होंने राज का, समाज का और अनुशासन का कौन-सा रूप हमारे सामने रखा |

यह फ़कीर अपनी जात से ऊँचा उठकर समाज को कुछ देना चाहता है इसीलिए उसने एक तरफ़ तो पुरानी पंरपराओं के ढाँचे को साफ़ और मज़बूत बनाकर हमारे सामने रखा और दूसरी तरफ़ उसने भारतीय संस्कृति के उस मिले-जुले रूप को पेश किया जो उस युग कि माँग थी और जिसका सिलसिला हिंदुस्तान में सदियों से चला आ रहा था | दरअसल भारतीय संस्कृति गंगा कि धारा के समान है जिसमे बहुत-सी धाराएँ मिलकर एक हो जाती हैं | भारत तो एक ऐसा चमन है जिसमें बहुत-सी ज़बानें हैं, बहुत-से धर्म हैं, बहुत-सी जातियाँ हैं, जो तरह-तरह के फूलों और फलों के मानिंद हैं और सब मिलकर चमन कि खूबसूरती बढ़ाते हैं | तुलसीदास ने इसी चमन में माली का काम किया | इसलिए देशो और विदेशी सभी विद्वान तुलसीदास पर मोहित हैं | हमें यह देखना होगा कि तुलसीदास में वे कौन-सी विशेषताएँ है जिनकी वजह से उसकी शख्सियत हर रोज़ रौशन होकर समाने आ रही है | यह ठीक है कि रामचरितमानस का हज़ारों और लाखों आदमी आज पाठ करते हैं और अपनी-अपनी भवनाओं के मुताबिक उसके अर्थ भी निकालते हैं लेकिन तुलसीदास को अम्र बनाने वाली चीज़ सिर्फ़ यहीं नहीं है | इसका हमें ठोस आधार ढूढ़ना होगा | तुलसीदास युगपुरुष थे, बल्कि हम कह सकते हैं कि युग-युग के पुरुष थे |

उन्हें प्रेरणा अपने युग से मिली, लेकिन वह उससे बँधे नहीं | सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में भारत कि सियासत में कुछ ठहराव आ गया था लेकिन कुछ ऐसी चीज़ें भी समाज में दाखिल हो चुकी थीं जिनका भारत कि परंपराओं से टकराव था |

भारतीय संस्कृति कि धारा भी कुछ अलग-लग दिशाओं में बह रही थी | जिंदगी के मूल्यों में भी उतार-चढ़ाव था | जिन्होंने भक्ति आंदोलन को गहराई से देखा होगा | वे इस बात को अच्छी तरह से समझ सकते हैं | तुलसीदास की निगाह ने इस बात को भाँप लिया और उन्होंने अपनी ज़िंदगी समाज और देश के लिए उत्सर्ग कर दी | भारतीय संस्कृति कि धारा वैदिक काल से ही अपनी दिशा बदलती रही है | परंपराएँ और जीवन के मूल्य भी अलग-अलग रूपों में हमारे सामने आते रहे हैं | भारत कि यह विशेषता रही है कि यहाँ संतो, कवियों और साहित्यकारों ने इस टकराव को दूर करने कि कोशिश की है | वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, आचार्य शंकर गोरखनाथ, कबीर, दादू और जायसी वगैरह ने भारतीय संस्कृति को विशेष दिशा देने का काम किया था | तुलसीदास ने भी अपने जीवन का यही मकसद बनाया | उसके सामने सवाल था कि वक किस आधार पर अपने मिशन को पूरा करें | समाज के हालात को देखकर उन्होंने राम और रावण कि कहानी को लिया और उनके ज़रिए भारतीय भारतीय संस्कृति का सारा रूप ही हमारे सामने पेश कर दिया | राम इंसानियत के पैमाने में और रावण हैवानियत के | इस तरह उन्होंने जनसमाज तक अपना संदेश पहुँचाने की कोशिश की | खूबी यह रही कि परंपरा के पुराने ढाँचे को उन्होंने रद्द नहीं किया, चाहे वर्णों के हो या आश्रमों का, वेदों का मसला हो या पुराणों का, सभी को उन्होंने अहमियत दी और सबको साथ लेकर उन्होंने समाज के ऐसा ढाँचा जनता के सामने पेश किया जिसको सबने पसंद किया | राम और रावण कि लड़ाई क्या है, निर्गुण और सगुण कि चर्चा क्या है, शिव शक्ति और विष्णु कि भक्ति क्या है - इन सबका निचोड़ तुलसीदास ने पेश करने की कोशिश की |

उपर्युक्त काव्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनें |

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखें |

(ख) लोगों का तुलसीदास के बारे में क्या मत है?

(ग) हज़ारों और लाखों आदमी आज किसका पाठ करके अपनी-अपनी भावनाओं के मुताबिक़ अर्थ निकालते हैं?

(घ) तुलसीदास के आलावा किन किन संतों और कवियों ने भारतीय संस्कृति को नई दिशा देने का काम किया था?

(ड) तुलसीदास ने समाज का कैसा ढाँचा जनता के सामने पेश किया, जिसको सभी नमे पसंद किया?

(च) तुलसीदास ने किसका निचोड़ पेश करने की कोशिश की?

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर, दिए गए प्रश्नो के उत्तरों में से सही विकल्प छांटकर लिखिए।**

जब गीतकार मर गया, चाँद रोने आया,
चाँदनी मचलने लगी कफ़न बन जाने को |
मलयानिल ने शव को कंधो पर उठा लिया,
वन ने भेजे चंदन-श्रीखंड जलाने को |
सूरज बोला, यह बड़ी रोशनीवाला था,
मैं भी न जिसे भर सका कभी उजियाली से,
रँग दिया आदमी के भीतर की दुनिया को
इस गायक ने अपने गीतों कि लाली से !

बोला बूढ़ा आकाश ध्यान जब यह धरता,
मुझ में यौवन का नया वेग जग जाता था |
इसके चिंतन में डुबकी एक लगाते ही,
तन कौन कहे, मन भी मेरा रँग जाता था |
देवों ने कहा, बड़ा सुख थे इसके मन की
गहराई में डूबने और उतराने में |
माया बोली, मैं कई बार थी भूल गई
अपने को गोपन भेद इसे बतलाने में |
योगी था, बोला सत्य, भागता मैं फिरता,
यह जाल बढ़ाए हुए दौड़ता चलता था |
जब-जब लेता यह पकड़ और हँसने लगता,
धोखा देकर मैं अपना रूप बदलता था |
मर्दों को आयी याद बाँकपन की बातें,
बोले, जो हो, आदमी बड़ा अलबेला था |
जिसके आगे तूफ़ान अदब से झुकते हैं,
उसको भी इसने अहंकार से झेला था |

उपर्युक्त काव्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनें |

(क) चंदन और श्रीखंड की क्या विशेषता है?

(ख) गीतकार की याद आने पर आकाश में होने वाले परिवर्तन को लिखें |

(ग) गीतकार की मृत्यु पर मर्दों की क्या प्रतिक्रिया थी?

(घ) कवि ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से क्या संदेश दिया है?

खण्ड - ख

(व्याकरण)

3. **निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर निर्देशानुसार दीजिए।**

(क) श्रवण आकर चला गया | सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य में बदलें |

(ख) मैं अपना शेष जीवन फ्राँस में गुजारूँगा | सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य में बदलें |

(ग) मोहित ने शादी के लिए कार्ड छपवाए| सरल वाक्य से मिश्र वाक्य में बदलें|

(घ) नीली साड़ी वाली बहु को बुलाओ| सरल वाक्य से मिश्र वाक्य में बदलें|

4. **निम्नलिखित समस्त पदों के भेद लिखें |**

(क) क्षमादान

(ख) महापुरुष

(ग) मरुभूमि

(घ) नीलकंठ

5. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए |**

(क) 'अपमानित होना' अर्थ के लिए प्रचलित मुहावरा क्या है?

(ख) 'भयभीत होना' अर्थ के लिए प्रचलित मुहावरा क्या है?

(ग) 'साहस समाप्त होना' अर्थ के लिए प्रचलित मुहावरा क्या है?

(घ) 'हैसियत से अधिक बात करना' अर्थ के लिए रूढ़ मुहावरा क्या है?

6. **निम्नलिखित मुहावरों को वाक्यो में प्रयोग कीजिए।**

(क) छक्के छुड़ाना

(ख) आग बबूला होना

(ग) प्राण सुखना

खण्ड - ग

(पाठ्य-पुस्तक)

7. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नो के उत्तर दीजिए-**

मेरा जी पढ़ने में बिलकुल न लगता था | एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ जैसा लगता था | मौका पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता और कभी कंकरियाँ उछालता, कभी कागज़ कि तितलियाँ उड़ाता और कहीं कोई साथी मिल गया, तो पूछना ही क्या | कभी चारदीवारी पर चढ़कर नीचे कूद रहे हैं | कभी फाटक पर सवार, उसे आगे पीछे-पीछे चलाते हुए मोटरकार का आनंद उठा रहे हैं, लेकिन कमरे में आते ही भाई साहब का वह रूद्र-रूप देखकर प्राण सुख जाते | उनका पहला सवाल यह होता - 'कहाँ थे' ? हमेशा यही सवाल, इसी ध्वनि में हमेशा पूछा जाता था और इसका जवाब मेरे पास केवल मौन था | न जाने मेरे मुँह से यह बात क्यों न निकलती कि ज़रा बाहर खेल रहा था | मेरा मौन कह देता था कि मुझे अपना अपराध स्वीकार है और भाई साहब के लिए उसके सिवा और कोई इलाज न था कि स्नेह और रोष से मिले हुए शब्दों में मेरा सत्कार करें |

(क) लेखक का मन पढ़ाई में क्यों नहीं लगता था?

(ख) लेखक को क्या करने में आनंद आता था?

(ग) लेखक अपने बड़े भाई साहब से डरता था | क्यों?

8. **निम्नलिहित प्रश्नो के संक्षिप्त उत्तर दीजिए-**

(क) बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं?

(ख) 26 जनवरी, 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गईं?

(ग) प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति-प्रदर्शन के लिए किस प्रकार के आयोजन किए जाते थे?

9. छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई?

10. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए:**

स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाला म्हाँने चाकर राखोजी |
चाकर रहस्यूँ बाग़ लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ |
बिन्दरावन री कुंज गली में, गोविन्द लीला गास्यूँ |
चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची |
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी |

(क) 'सुमरण पास्यूँ खरची' का क्या अर्थ है?

(ख) 'तीनूं बाता सरसी' का क्या आशय है?

(ग) 'भाव भगती जागीरी पास्यूँ' का क्या आशय है?

11. कबीर ने साखियों के माध्यम से हमें कौन-कौन से संदेश दिए हैं?
12. ‘हरिहर काका’ कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए |

खण्ड-घ

('लेखन')

13. दिए गए संकेत बिन्दुओ के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए -
    अनुशासनहीनता देश कि समस्याओं की जड़
    संकेत-बिंदु: (i) अनुशासन विभिन्न समस्याओं की जड़ है (ii) विभिन्न समस्याओं के निराकरण के उपाय (iii) अनुशासन प्रकृति का नियम |
14. जिला उपायुक्त को पत्र लिखिए जिसमें विद्यार्थियों की पढ़ाई में होने वाली हानि के संदर्भ में शहर के सिनेमाघरों में प्रातःकालीन शो को बंद करने का निवेदन किया गया हो |
15. एक विद्यार्थी जो आज ही एक नई पेन खरीदकर विद्यालय आया था भोजनावकाश तक उसने उस पेन से कार्य किया परंतु उसके पाश्चात् वह उससे कहीं विद्यालय परिसर में गिर गया| इस आशय की सूचना जारी करें |
16. तीन मित्र जंगल में रास्ता भटक गए हैं | उनका आपस में संवाद लिखिए |
17. आपकी दुकान में आई नई छतरी का विज्ञापन लिखिए।

आदर्श प्रश्न- पत्र - 2

संकलित परीक्षा - I

विषय - हिंदी 'ब'

कक्षा - दसवी

निर्धारित समय: 3 घण्टे **अधिकतम अंक: 90**

खंड-क

(अपठित गद्यांश)

1. **(क)** उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक - युग-युग के पुरुष - तुलसीदास |

   (ख) कुछ लोगों ने तुलसीदास को पुराणपंथी और दकियानूसी बताया तो कुछ और लोगों ने उन्हें प्रगतिवादी और समाजवादी साबित किया |

   (ग) हज़ारों और लाखों आदमी आज रामचरितमानस का पाठ करते हैं और अपनी-अपनी भवनाओं के मुताबिक़ उसके अर्थ निकालते हैं |

   (घ) तुलसीदास के अलावा वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, आचार्य शंकर, गोरखनाथ, कबीर, दादू और जायसी वगैरह ने भारतीय संस्कृति को नई दिशा देने का काम किया था |

   (ङ) तुलसीदास जी ने परंपरा के पुराने ढाँचे को रद्द नहीं किया, चाहे वर्णों का हो या आश्रमों का, वेदों का मसला हो या पुराणों का, सभी को उन्होंने अहमियत दी और सबका साथ लेकर उन्होंने समाज का ऐसा ढाँचा जनता के सामने पेश किया जिसको सबने पसंद किया |

   (च) तुलसीदास जी ने राम और रावण की लड़ाई क्या है, निर्गुण और सगुण कि चर्चा क्या है, शिव शक्ति और विष्णु की भक्ति क्या है- इन सबका निचोड़ पेश करने की कोशिश की |

2. **(क)** चंदन और श्रीखंड विशेष प्रकार की सुगंधित लकड़ी है| इसका उपयोग धार्मिक कार्यों में किया जाता है|

   (ख) गीतकार के याद आने पर आकाश जवान हो जाता है| वह बाहर और भीतर से उर्जावान महसूस करने लगता है|

   (ग) गीतकार की मृत्यु पर मर्दों ने गीतकार की प्रशंसा की| उन्होंने गीतकार को अलबेला बाँका, दबंग और स्वाभिमानी बताया |

   (घ) इस कविता के माध्यम से गीतकार के आकर्षण व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है| गीतकार चाँद की भाँति सबको शीतल प्रकाश देता है| उसके गीतों के प्रभाव से वातावरण अनुरागमय हो जाता है| देवता और योगी तक उससे प्रभावित हैं| फिर अलबेले पुरुष तो गीतकार की भवनाओं में रंगकर मदमस्त हो जाते हैं| कवि ने प्रश्नोक्त पंक्तियों के माध्यम से अहंकार, सहृदयता एव सद्व्यवहार को महिमामंडित कर उसे अपनाने का संदेश दिया है|

खण्ड - ख

(व्याकरण)

3. **(क)** श्रवण आया और चला गया |

   (ख) मैं फ्राँस जाऊँगा और अपना शेष जीवन वहीं गुजारूँगा|

(ग) मोहित ने जो कार्ड छपवाए, वे शादी के लिए थे|

(घ) उस बहु को बुलाओं जिसने नीली साड़ी पहनी है|

4. (क) तत्पुरुष

(ख) कर्मधारय

(ग) तत्पुरुष

(घ) कर्मधारय

5. (क) सिर झुकना |

(ख) प्राण सुखना |

(ग) हिम्मत टूटना

(घ) छोटा मुँह बड़ी बात

6. (क) हमारे पडोसी ने चोरो के छक्के छुड़ा दिए।

(ख) पिता जी मेरा अंक पत्र देखकर आग बबूला हो गए क्योंकि मैं असफल हो गया था।

(ग) चोरो को देखकर हरीश के प्राण सुख गए।

खण्ड - ग

(पाठ्य-पुस्तक)

7. **(क)** लेखक का मन पढ़ाई में नहीं लगता था क्योंकि उसकी रूचि खेलने तथा मौज-मस्ती करने में रहती थी|

(ख) लेखक को खेलने-कूदने तथा मौज-मस्ती करने में आनंद आता था | वह प्रायः अवसर पाते ही हॉस्टल से बाहर आकर कंकरियाँ उछालता, कागज़ कि तितलियाँ उड़ाने लगता था | कभी-कभी लेखक अपने मित्रों के साथ गप्पे भी हाँकता था |

(ग) बड़े भाई साहब क्रोधी थे | अतः लेखक चाहकर भी अपनी सफाई में कुछ नहीं कहकर भयवश मौन रहता था |

8. **(क)** बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ दबानी पड़ती थीं क्योंकि वे कभी मेले-तमाशों में नहीं जाते थे | वे हॉकी-क्रिकेट मैचों के पास तक नहीं फटकते थे | बस हर समय पढ़ाई करते रहते थे | इसके बावजूद भी एक-एक कक्षा कई-कई साल में पास करते थे | वे मजबूत नींव बनाने में विश्वास करते थे | उन्हें अपनी पोजीशन और कर्तव्य का भी ध्यान रहता था | वो कहते थे - 'मेरा जी भी ललचाता है, लेकिन क्या करूँ, खुद बेराह चलूँ तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ? कर्तव्य भी मेरे सिर है |"

(ख) 26 जनवरी, 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए कलकत्ता के बड़े बाज़ार के प्रायः सभी मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा दिया गया| उन्हें सजाया भी गया| प्रत्येक रास्ते पर झंडे लगाए गए| इससे लोगों में उत्साह का संचार हुआ| मोनुमेंट के नीचे शाम को झंडा फहराने एवं सभा का आयोजन किया गया| अनेक स्थानों से जुलूस निकालने का कार्यक्रम बनाया गया| मारवाड़ी बालिका विद्यालय में लड़कियों द्वारा झंडोत्सव मनाने की तैयारियाँ की गई|

(ग) प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति-प्रदर्शन के लिए अस्त्र-शस्त्र चलाने संबंधी आयोजन तथा पशु पर्व किए जाते थे |

9. एक दिन जब वह एक पतंग के पीछे दौड़ रहा था तो बड़े भाई साहब ने उसे पकड़ लिया | उन्होंने उसे बुरी तरह फटकारा | उनके द्वारा दिए गए तर्क और उदाहरण इतने सटीक थे कि छोटा भाई हैरान रह

गया | बड़े भाई साहब ने उसे बताया कि केवल किताबी ज्ञान पा लेने से कोई महान् नहीं बन जाता बल्कि जीवन की समझ तो अनुभव से आती है | बड़े भाई साहब छोटे भाई को बड़े ही सुंदर ढंग से समझाते है कि पढ़-लिखकर पास होना और जीवन की समझ होना दोनों अलग-अलग बातें हैं | चाहे परीक्षा में पास न हुए हों किंतु उनके पास जीवन अनुभव अधिक है | परीक्षा में केवल पास होना ही बड़ी बात नहीं है | अपितु जीवन में अच्छे-बुरे समय में अपने आपको उसके अनुसार ढाल लेना बड़ी बात है | बड़े भाई साहब उसे अपने माता-पिता और हेडमास्टर साहब का उदाहरण देकर समझाते हैं कि जीवन में अनुभव की अधिक आवश्यकता है और उनके पास उससे कहीं ज्यादा अनुभव है | बड़े भाई साहब की ऐसी विद्वतापूर्ण बातों को सुनकर छोटे भाई के मन में उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई थी |

10. **(क)** प्रश्नोक्त पंक्ति का अर्थ यह है कि सुमिरण अर्थात् जाप करने वाले को ईश्वर नाम के खर्च होने की चिंता नहीं होती| वे प्रभु के दर्शन हो जाने तक जाप, सुमिरण करते रहते हैं|

    (ख) प्रश्नोक्त पंक्ति का आशय यह है कि भक्ति के तीन रूप हैं - नाम स्मरण, भक्ति-भाव तथा प्रभु दर्शन जिन्हें मीरा श्रीकृष्ण की सेविका बनकर पाना चाहती है|

    (ग) प्रश्नोक्त पंक्तियों का आशय यह है कि कवियत्री श्रीकृष्ण की सेविका बनकर उनके दर्शन, स्मरण तथा भक्ति रूपी साम्राज्य को सहज ही प्राप्त कर लेगी |

11. कबीरदास के अनुसार हमें ऐसे मधुर वचनों का प्रयोग करना चाहिए जससे दूसरों को भी सुख का अनुभव हो | उनका मानना है कि ईश्वर प्रत्येक हृदय में विद्यमान है, किंतु मनुष्य कस्तुरी के मृग की तरह उसे इधर-उधर ढूँढ़ता फिरता है| ईश्वर को प्राप्त करने के लिए अहंकार को नष्ट करना आवश्यक है और मन को पूर्ण एकाग्र करके ही ईश्वर को पाया जा सकता है| ईश्वर को प्राप्त करने के लिए वे सभी प्रकार की वेशभूषा को अपनाने के लिए तैयार हैं| कबीरदास जी कहते हैं कि सांसारिक लोग विषय-वासना में डूबे रहते हैं| वे खाने-पीने और सोने में सुख अनुभव करतेहैं किंतु ज्ञानी व्यक्ति जीवन की नश्वरता को देखकर दुखी रहता है| ईश्वर के विरह में तड़पने वाला व्यक्ति अत्यंत कष्टमय जीवन व्यतीत करता है| उनका मानना है कि नुष्य को अपने आलोचकों को भी अपने आस-पास ही रखना चाहिए | क्योंकि निंदा करने वाले व्यक्ति के सभी दोषों को दूर कर देते हैं| उनके अनुसार ग्रंथो को पढ़कर कोई व्यक्ति विद्वान नहीं हो सकता है| जो व्यक्ति ईश्वर प्रेम के मार्ग पर चलता है, वही विद्वान होता है| ईश्वर प्रेम के प्रकाशित होने पर एक विचित्र-सा प्रकाश हो जाता है| उसके बाद तो मनुष्य की वाणी से भी सुगंध आने लगती है|

12. घर एह जगह है जो अपनों के सुख-दुख में, आपद-विपद में, हारी-बीमारी में, हर्ष-उल्लास में एक-दूसरे के काम आना सिखाता है| एक-दूसरे की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने की सिख और अवसर देता है| धर्मस्थल इसी अपनेपन को, इसी सहृदयता को, सहयोग की इसी भावना को अपनों से कहीं आगे प्राणीमात्र तक विस्तार देने की समझ और संस्कार देता है| यदि कभी किसी के मामले में घर और धर्मस्थल यानी परिवार और प्रभु दरबार दोनों ही अपनी भूमिका छोड़ अपने मूल स्वभाव की तिलांजलि दे दें तो? तब जो अराजकता और अनाचार, अन्याय और आपाधापी मचेगी , वह वैसी हो होगी जैसी हरिहर काका के संग हुई| सशक्त व्यक्ति-चित्र खींचते हुए कथाकार मिथिलेश्वर ने हरिहर काका कहानी के बहाने ग्रामीण पारिवारिक जीवन में ही नहीं हमारी आस्था के प्रतीक धर्मस्थलों और धर्मध्वजाधारकों में जो स्वार्थ लोलुपता घर करती जा रही है उसे उजागर किया है| हरिहर काका एक वृद्ध और निःसंतान व्यक्ति हैं, वैसे उनका भरा-पूरा संयुक्त परिवार है| गाँव के लोग कुमार्ग पर न चलें यह सीख देने के लिए एक ठाकुराबारी भी है, लेकिन हरिहर काका की विडंबना देखी कि यहीं दोनों उनके लिए काल और विकराल

बन जाते हैं| न तो परिवार को हरिहर काका की फिक्र है न मठाधीश को, दोनों उन्हें सुख नहीं देने में, उनका हित नहीं अहित करने में ही मग्न रहते हैं| दोनों का लक्ष्य एक ही है, हरिहर काक की जमीन हथियाना| इसके लिए उन्हें चाहे हरिहर काका के साथ छल, बल, कल का प्रयोग भी क्यों न करना पड़े | पारिवारिक संबंधों में भ्रातृभाव को बेदखल कर पाँव पसारती जा रही स्वार्थ लिप्सा और धर्म की आड़ में फलने-फूलने कजा अवसर पा रही हिंसावृत्ति को बेनकाब करती यह कहानी आज के ग्रामीण ही नहीं शहरी जीवन का भी यथार्थ उजागर करती है|

खण्ड-घ

('लेखन')

13. अनुशासनहीनता देश कि समस्याओं की जड़

देश की विभिन्न समस्याओं को गहराई में जाकर देखे तो उसमें कुछ ऐसी बाते मिलती हैं जो देश की विभिन्न समस्याओं को जन्म देती हैं | जिनमें आर्थिक और राजनीतिक महत्त्व के साथ ही साथ देश कि राष्ट्र भाषा, धर्म, संस्कृति और खानपान के आधार पर लोगों में आनुशासन तोड़ने अथवा समस्याएँ खड़ी करने के लिए प्रेरित हों एके प्रसंग मिलते हैं | देश में व्याप्त इन समस्याओं के निराकरण के लिए देश के प्रयेक नागरिक को अनुशासन प्रिय होना चाहिए | अनिशासन में बंधा हुआ है | कहावत प्रसिद्ध है कि अनुशासनहीनता अराजकता को जन्म देती है तथा अराजकता दासत्व को | अराजकता देश को अवनित तथा पतन कि ओर धकेलती है |

14. प्रति,

उपायुक्त,

गुरुग्राम

विषय- विद्यार्थियों के हित शहर के सिनेमाघरों में प्रातःकालीन शो बंद करने हेतु |

महोदय,

मैं आपका ध्यान इसनगर के सिनमाघरों में चलने वाले प्रातःकालीन शो, जो नौबजे प्रारंभ हो जाता है, कीओर दिलाना चाहता हूँ | इस शो में फ़िल्म देखने वाले दर्शकों में लगभग 80 प्रतिशत स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थी होते हैं | वे अपनी कक्षाएँ छोड़कर फ़िल्म देखने जातेहैं | फ़िल्म देखकर स्कूल अथवा कॉलेज के बंद होने के समय वे अपने-अपने घर व गाँव चले जाते हैं | इस प्रकार उनके माता-पिता को उनके द्वारा कक्षाओं से अनुपस्थित रहकर फ़िल्म देखने की बुरी लत का पता भी नहीं चलता | विद्यालयों के प्राचार्यों द्वारा उनके विरुद्ध की गई अनुशासनात्मक कार्यवाही भी विशेष प्रभावकाल नहीं हो पाई |

विद्यार्थियों की यह अवस्था अपरिपक्व होती है | वे अपने हित-अहित को नहीं सोच पाते | अतः आपसे निवेदन है कि आप यहाँ सिनेमाघरों में होने वाले प्रातःकालीन शो पर प्रतिबंध लगाने का कष्ट करें |

भवदीय,

मोहित महेश्वरी

अध्यापक

हिंदी विभाग,

कृत सीनियर सेकेंडरी स्कूल,

गुरुग्राम

15. बाल विकास विद्यालय

साध नगर,पालम

दिल्ली

दिनांक 25 सितम्बर 2016

सूचना

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि कक्षा दसवीं बी के विद्यार्थी मोहित सिंह राणा का पेन भोजनावकाश में कहीं गिर गया है | यह पार्कर पेन नीले रंग का है | यदि किसी विद्यार्थी को भी यह पेन मिले तो कृपया मोहित को लौटा दें |

आपका अति आभार होगा |

हेड बॉय

बाल विकास विद्यालय

साध नगर,पालम

16. **राहुल -** श्रवण, मुझे बड़ा डर लग रहा है, कितना भयानक जंगल है |

श्रवण - डर तो मुझे भी लग रहा है राहुल !

राहुल - ये मोहित की वजह से हुआ है |

श्रवण - अरे! मोहित कहाँ रह गया ? अभी तो यहीं था !

राहुल - हम कभी घर नहीं पहुँच पाएँगे . . .

श्रवण - चुप करो ! मोहित! अरे मोहित !

मोहित - आ रहा हूँ ! वहीं रुकना ! पैर में काँटा चुभ गया था !

राहुल - श्रवण, बचाओं !

मोहित - डरपोक कहीं का !

राहुल - तुम आ गए |

मोहित - हाँ आ गया | एकनंबर के डरपोक हो तुम दोनों |

17.